nbt.india

एकः सूते सकलम्

Rs. 10/-

Readers' Club Bulletin

पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 19, No. 5, May 2014

Readers' Club Bulletin
पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 19, No. 5, May 2014 **वर्ष 19, अंक 5, मई 2014**

Editor / संपादक
Manas Ranjan Mahapatra
मानस रंजन महापात्र

Assistant Editors / सहायक संपादकगण
Deepak Kumar Gupta
दीपक कुमार गुप्ता
Surekha Sachdeva
सुरेखा सचदेव

Production Officer / उत्पादन अधिकारी
Narender Kumar
नरेन्द्र कुमार

Illustrator / चित्रकार
Arya Praharaj
आर्य प्रहराज

Printed and published by Mr. Satish Kumar, Joint Director (Production), National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

Typesetted & Printed at Pushpak Press Pvt, Ltd. 203-204, DSIDC Shed, Ph-I Okhla Ind. Area, N.D.

Contents/सूची

Celebrating Indian Children's Literature		1
सात समुंदर	डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी	2
Cow Stars	Samrit Bouasisavath	6
दो कविताएँ	शंकर सुल्तानपुरी	9
दीक्षा की पहली हवाई ...	डॉ. मनोरमा विश्वाल महापात्र	10
Toughy	S.K. Trivedi	14
जब जागो तभी सवेरा	अंजली गुप्ता	16
नन्ही गौरैया	राकेश 'चक्र'	18
Monkey and His	Prabir Kumar Pal	19
बच्चों को अपनी ओर ...	बलविन्दर 'बालम'	20
मटके का पानी	कमलसिंह चौहान	21
My Dream Travel ...	Ahir Verma	22
नीमवाला घर	ओमप्रकाश बजाज	28
बस की यात्रा	रान्दाय तोरकोद	29
Mysterious Ring	Pakhi Saini	30
लोहे की कील, तांबे ...	आइवर यूशिएल	32

Editorial Address/ **संपादकीय पता**

National Centre for Children's Literature, National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase - II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेस-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

E-Mail (ई-मेल) : office.nbt@nic.in

Per Copy/ एक प्रति Rs. 10.00 Annual subscription/वार्षिक ग्राहकी : **Rs. 100.00**

Please send your subscription in favour of **National Book Trust, India.**

कृपया भुगतान **नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के** नाम भेजें।

This Bulletin is meant for free distribution to Readers' Clubs associated with National Centre for Children's Literature.

यह बुलेटिन राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र से जुड़े पाठक मंचों को निशुल्क वितरित किया जाता है।

Celebrating Indian Children's Literature at AFCC 2014

India is the Focus Country at the Asian Festival of Children's Content 2014 (AFCC) to be held at National Library Board, Singapore from 30 May 2014 to 4 June 2014. The focus country presentation will be coordinated by the National Book Trust, India as usual.

The focus country presentation by India will showcase India's long and rich heritage of children's literature, storytelling and indigenous artistic traditions in multicultural and multilingual set up. The presentation will include a special exhibit of about 200 recently published children's books in Indian languages including English, a set of specially curated panels displaying a visual journey of children's literature in India and illustrative elements of Indian storytelling tradition, besides business sessions and workshops.

Some of India's noted children's writers, illustrators, publishers and developers of children's content like Leila Seth, Atanu Roy, Deepa Agarwal, Arup Kumar Dutta, Nina Sabnani, Divik Ramesh, Navin Menon, Atiya Zaidi, Manas Mohan among others will participate in various discussions, talks, workshops, seminars etc to be organised

at AFCC and will bring out into light the various aspects of the Indian children's literature. Dr M A Sikandar, Director, NBT will lead the Indian Delegation.

AFCC, organised annually by the National Book Development Council of Singapore (NBDCS), is one of the major events of the children's content in the world. Renowned authors, illustrators, publishes, editors and others associated with the children's literature from different countries participate in the festival. AFCC provides a platform to the participants to know, share, learn and discuss the different aspects of children's content acorss the world. Invitation to India as the Focus Country at AFCC 2014 is *de facto* a distinct recognition of India's emergence as a major country in publishing children's literature.

धारावाहिक उपन्यास
भाग : 14

सात समुंदर

कुछ खोना, कुछ पाना

डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी

विश्वविद्यालय से बाहर आने पर गायत्री ने देखा कि कोई चोर उसकी साइकिल चुराकर भागा जा रहा है। वहाँ भीड़ लग जाती है और चोर पकड़ा जाता है। अब दस लोग, दस बातें। गायत्री के दद्दा नारायणन कोई लफड़ा नहीं चाहते थे। पुलिसवाले ने चोर को तमाचा रसीद किया और छोड़ दिया। अब इस अंक में कुछ और बातें ...

''अरे अप्पुपन, कहाँ गए?'' गायत्री अचरज में पड़ गई। आज कुछ जल्दी ही छुट्टी हो गई थी। कुमारन को अपने किसी काम से जाना था। तरणताल से निकलकर गायत्री अपने दादा को ढूँढ़ रही थी।

आज यहाँ आते-आते ही एक दुर्घटना होते-होते रह गई। वे आ ही रहे थे कि तभी गुर्रर... भौं... तेज रफ्तार मोटरसाइकिल सवार दो छोकरे एकदम नारायणन की बगल से निकल गए। खुद को शायद किसी हीरो से कम नहीं समझते हैं ये।

मोटरसाइकिल की हैंडिल में फँसकर उनकी धोती फट गई। सँभालते-सँभालते नारायणन सड़क पर गिर गए, ''ओह, देखकर भी नहीं चलाता!''

खैर, कुछ हुआ नहीं। मगर पैर में मोच आ गई थी। वे लँगड़ा रहे थे। ''चल गायत्री, आज पैदल ही चल।''

''तुम्हें चोट तो ज्यादा नहीं आई दद्दा?'' गायत्री घबरा गई।

''नहीं रे, चल-चल।''

गायत्री साइकिल सँभालकर चलने लगी। उसके अप्पुपन पीछे-पीछे लँगड़ाकर चले।

तरणताल के गेट के पास जाकर उन्होंने कहा, ''हम यहीं बाहर उस दुकान के सामने बैठे रहते हैं। तू अंदर चली जा।''

अब बाहर निकलकर गायत्री चिंता में पड़ गई। आखिर अप्पुपन गए कहाँ? उसने आगे बढ़कर उस दुकानदार से पूछा तो उसने जवाब दिया, ''अभी तो यहीं थे, पता नहीं कहाँ चले गए। उनकी साइकिल है कि नहीं?''

असल में बैठे रहते-रहते नारायणन ने सोचा, अभी तो गायत्री के निकलने में देर है। अगर कहीं कोई दवा की दुकान खुली हो तो एकाध दर्द की टिकिया खा लें।

इत्तफाक से आज गायत्री जल्दी ही निकल आई। इधर-उधर ढूँढ़ते हुए गायत्री ने सोचा,

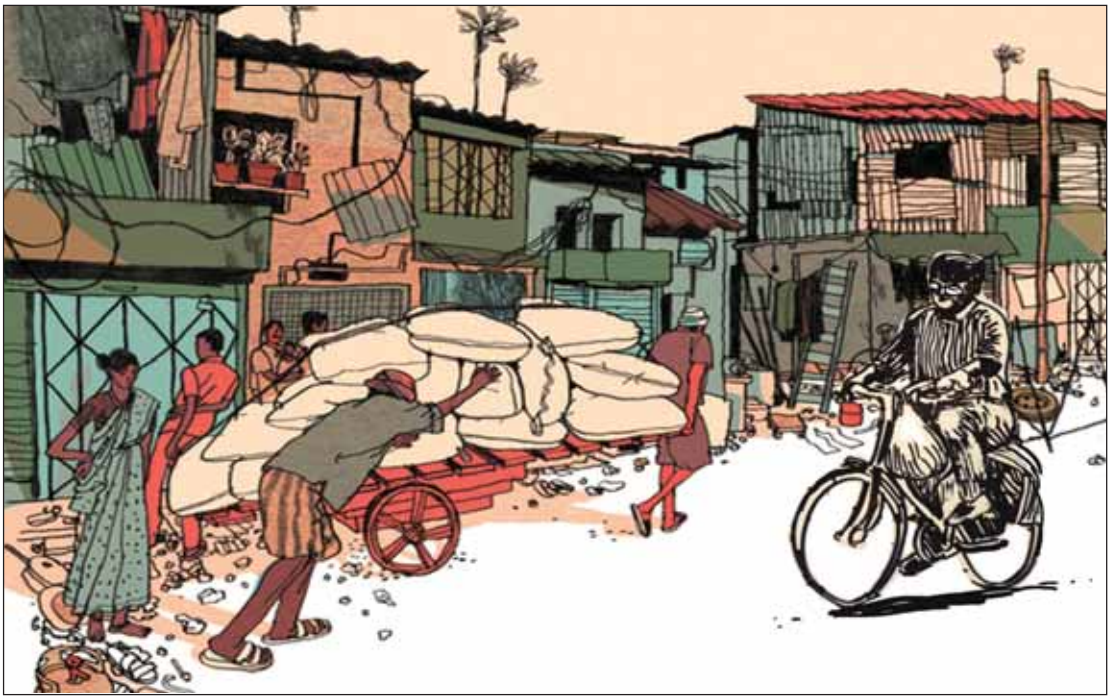

चलें, जरा फेरीघाट चलें। वहीं स्टीमरवाले से पूछ लेंगे। नहीं तो दद्दा वहाँ तो जरूर पहुँच जाएँगे। मुख्य सड़क पर पहुँचते ही उसने देखा, चारों ओर पुलिस खड़ी है। दोनों तरफ पटरी पर लोग खड़े हैं। उसे एक सिपाही ने डाँटा, ''ए लड़की, अभी सड़क मत पार करना!''

भीड़ में बेचारी इधर-उधर झाँकती रही। आज कोई उच्च अधिकारी या मंत्री आने वाले हैं, इसीलिए यह इंतजाम किया गया है। देखते-देखते 'हुँईं...हुँईं...' की सीटी बजाते हुए लाल बत्ती के साथ काफिला गुजर गया। लोग इधर-उधर दौड़ने लगे।

सड़क पार कर दूसरी ओर जाकर गायत्री ने देखा, अरे! यह तो कोई अनजान-सी जगह है। अप्पुपन रोज इधर से तो आते नहीं। मैं किधर जाऊँ? किसी से पूछूँ? लेकिन अम्मा ने तो बार-बार मना कर दिया था, 'गायत्री, कभी किसी अनजान व्यक्ति से बात नहीं करना। हर समय अप्पुपन के पास रहना।' परंतु इस समय अप्पुपन हैं कहाँ?

हे पद्मनाभस्वामी! उसे रोना आ गया।

गायत्री ने आगे बढ़कर एक डाब वाले से पूछा, ''स्टीमर घाट का रास्ता कौन-सा है?''

''वो, वही तो है!''

गायत्री दौड़ने लगी।

उसने पीछे से आवाज दी, ''अरे, दाहिने मुड़ जाना!''

गायत्री आगे बढ़ चुकी थी। अब उसे घबराहट

होने लगी। उसे पता भी नहीं चला कि उसके गाल पर आँसू की धारा फूट निकली है।

तभी किसी ने आकर उसकी पीठ पर हाथ रखा, ''कहाँ जाना है? रास्ता भूल गई हो?'' उस आदमी के हाथ में एक बैडमिंटन का रैकेट था।

''हाँ, मैं... मुझे हरिपदम् जाना है। मेरे अप्पुपन!'' गायत्री आँखें मलने लगी।

''तुम्हारे अप्पुपन कहाँ हैं?''

''खो गए हैं।'' सिसकियों के बीच उसने कहा।

''वो खो गए हैं या तुम खो गई हो?'' ऑर्थर मुस्कुरा दिया।

''मेरा क्या कसूर है? मैं तो स्विमिंग पूल से निकली ही थी।''

''ओ! तो तुम स्विमिंग सीखने आती हो?''

''सीखने नहीं, ट्रेनिंग लेने। तैराकी तो मेरे अप्पुपन ने ही मुझे सिखा दी थी।''

''ओ-हो, देखो, मैं भी तो बैडमिंटन प्लेयर हूँ। और हरिपदम् का ही लड़का हूँ। मेरा नाम ऑर्थर है। तुम्हारे अप्पुपन कौन हैं?''

''श्री शशिशेखर नारायणन।''

''अरे, तुम हेडमास्टर साहब की कुचुमोल हो! चलो, तुम्हें फेरीघाट ले चलूँ।''

डरते-डरते, माँ की याद करते-करते गायत्री उसके साथ चलने लगी।

इधर, तरणताल गेट के पास वापस आकर नारायणन तो सुस्ता रहे थे कि गायत्री कब बाहर निकलेगी। इतने में उस दुकानदार ने कहा, ''सर, आपकी पोती तो कब की बाहर निकल चुकी है। आप ही को ढूँढ़ रही थी।''

''क्या?'' नारायणन के सिर पर मानो वज्रपात हुआ। ''तुमने उसे बैठाया क्यों नहीं?''

''अरे सर, अब दुकानदारी का समय है। ग्राहक से निबटें तब तो...!''

नारायणन लँगड़ाते-लँगड़ाते साइकिल पर सवार हो गए। एक बार दरबान से पूछा तो उसने भी कहा कि कुमारन सर तो कब के जा चुके हैं। कोई बच्चा अंदर है भी नहीं।

नारायणन सरपट दौड़े फेरीघाट की ओर।

अपने अप्पुपन को देखते ही गायत्री उनकी ओर दौड़ी, ''दद्दा, अब तक कहाँ थे?''

''तू कहाँ चली गई थी रे? मेरे तो होश ही उड़ गए। यहाँ तक तू अकेली आई है?''

गायत्री ने इशारा किया, ''मैं तो भटक गई थी, इन्हीं अंकल ने मुझे यहाँ तक पहुँचाया।''

''अरे ऑर्थर, तुम! यहाँ कैसे?''

'बस, इधर एक हफ्ते से मैं भी अलेप्पी में ही था। सर, आप कैसे हैं?''

''मैं तो बिलकुल ठीक हूँ, सोचो तो, आज अगर ऐसी-वैसी बात हो जाती तो मैं किस मुँह से घर लौटता? मणि और अनंती को क्या जबाव देता?'' नारायणन हाँफ रहे थे।

''अम्मा से मिलिएगा तो कहिएगा मैं बिलकुल ठीक हूँ।''

''जरूर-जरूर! ओणम के दिन चिरुता कह रही थी कि तुम्हारी तबीयत इधर ठीक नहीं रहती है। क्या बात है बेटा?''

''सर, सबसे पहले आपने ही मेरे हाथों में बैडमिंटन का रैकेट थमाया था। आपका आशीर्वाद रहा तो मैं फिर से खेलूँगा। जरूर खेलूँगा। डटकर खेलूँगा।''

नारायणन ने उसे गले से लगा लिया। ऑर्थर सोच रहा था कि आज भी यह वृद्ध अपनी पोती के जीवन को सँवारने में क्या कुछ नहीं कर रहा है। कितना उत्साह!

ऑर्थर को याद आया। गिरजा में प्रति रविवार पादरी साहब पवित्र बाइबिल का एक-एक अंश सुनाते हैं। उसके कान में जालम का एक मंत्र ध्वनित होने लगा, ''हे ईश्वर! मुझ पर कृपा करो, मैं दुर्बल हूँ। हे ईश्वर! मेरी अस्थियाँ जर्जर हैं, मुझे निरोग करो।''

ऑर्थर के हृदय में गिरजाघर के घंटे की ध्वनि गूँज रही थी...।

सी-26/35-40ए
रामकटोरा
वाराणसी-221001 (उ.प्र.)

From NBT's Treasure Trove

Cow Stars

Samrit Bouasisavath

Long, long ago, so long ago that nobody knows exactly when it was, all animals could speak like men. At that time there was a cow and her calf, a daughter, who lived in a forest near a beautiful lake. The cow loved her calf as she loved her own eyes, and the calf loved her mother as she loved her own heart. They stayed in the forest safe and happy for a long time, until one day something terrible happened to them.

One evening, the cow left her calf at home while she went to eat grass near the lake. Suddenly, a huge tiger appeared and crouched to attack her. The cow was very frightened, and didn't know what to do. She thought of her calf, and was very worried, but she tried to be calm. "Oh, King of Tigers! I beg you to pardon me! Do not be in a hurry to kill me now. I have a calf at home, waiting to drink my milk. Please allow me to go back home and give her the milk. Early tomorrow morning I will come back here so that you can eat me."

The tiger looked at the cow, afraid and pleading with him like that, and took pity on her. "Have you got a calf?" He said. "If you are speaking the truth and will come here again so that I can eat you, I agree to let you go home so that you can give her the milk. But do not forget to come back tomorrow morning! I will be waiting here for you, and if you do not come, I shall go and eat both of you! Do you understand? Do not forget!"

"Certainly sir, I will not forget," replied the cow fearfully. "Letting me go to my calf is kind and merciful."

"Go quickly then, and do not forget to come back to me here tomorrow morning," the tiger answered.

At this the cow was very glad, and thanked him profusely. She returned home, crying, "Come, my child! Be quick and drink your milk now. From tomorrow morning you will not see me again, and you shall have no more milk to drink."

The calf was surprised, and then said, "Why do you say that?" She asked. "I have never heard you speak like this before!"

Her mother wept. "Oh, my child!" She replied, the tears streaming from her eyes. "This evening I was very unlucky. When I was looking for grass to eat, I met a big tiger. He was going to attack and eat me, but I asked him to let me come back to you and give you milk. Tomorrow morning I must return to be his victim. Come on, my child! Be quick and drink your milk. From tomorrow you will have neither me nor my milk. You will have to live here alone in the forest, with all kinds of enemies. Be careful, protect yourself, and try to escape from them! Look at me now, because this is the last time you will ever see me!"

The calf looked very sad. "No, no, my mother!" She responded. "You must not die! You have me for your daughter! A mother's task is her daughter's also. Therefore I will go to die in your place. Be calm and do not worry, I will gladly give up my life for you. It is my duty to go and let the tiger eat me. May you have a long and happy life, my mother."

When the cow heard her calf's words she was hearbroken, pitying her daughter, but at the same time very proud of her.

No, not at all, my child! I cannot let you die. You are still too young, with a long bright future ahead of you. You cannot go to be the victim of the tiger for me, because without you my life has no meaning. It is better for me to die, and may you have better luck in the future. We cannot know the future, she added, "But we have to be hopeful about it."

While they were talking, the sun began to rise. It was the early morning of a new day. The kind little calf suddenly left her mother, and hurried to meet the tiger. Her mother ran after her.

The calf arrived to meet the tiger before the cow, crying out, "King of Tigers! Do not eat my mother, come and eat me instead! My meat will be tender and delicious. Help me to do this good thing for my mother!"

The cow ran up crying at the same time, "Master! Do not eat my child! She is young, and still very small. She will not fill your stomach. Come and eat me according to our agreement and you will have much more meat, as well as helping to do my duty as I wish."

The tiger was astonished at these words. "Why do they not fear to die?" He asked himself. "Both of them ask me to eat them. Animals are usually afraid of death. This is real love between a mother and her daughter, who are so close to each other that each would even give up her life for the other. I cannot detroy this love for my stomach! I will grant them their lives because of their goodness."

Then he spoke. "Oh my dear victims! I am the King of the Tigers. I could eat one of you, or both of you, but I have now decided that I cannot eat either of you, because your goodness has touched me. You would sacrifice your lives for each other. I am very pleased with you, so I will give you your lives. Go home and be happy forever."

When the tiger had finished speaking, he leapt into the forest and he disappeared before the cow and her calf, now very happy, could thank him. Joyfully they made their way home, and lived together happily for many years.

When finally they left this world, they became two stars in heaven called the 'Cow Stars', which can be seen in the night sky to this day.

(From NBT's Publication *Read Me a Story*)

दो कविताएँ

शंकर सुल्तानपुरी

नया-निराला गाँव

मेरा गाँव, तुम्हारा गाँव,
अपना गाँव, हमारा गाँव।

मिट्टी के घर, कुछ पर छत है,
कुछ पर छप्पर।

हरी-भरी लौकी की बेलें,
कद्दू काका के संग डोलें।

खेत हरे, खलिहान भरे हैं,
ये राधा-मोहन का ठाँव।

ताल-तलैया, नन्ही नय्या,
बरगद दादा, पीपल गय्या।

महुआ मामा, जामुन चाचा,
आमू मामू, असलम, श्यामू।
मेल-जोल की छाँव
नया निराला गाँव।

चूहे तीन

एक गाँव में
चूहे तीन,
ले आए
मोबाइल फोन।
बोले, प्यारो!
खबरदार हो,
बिल्ली इंटरनेट पर,
सारे भारत के चूहों को,
अब ई-मेल तुरंत कर,
बिल्ली की लोकेशन देखेंगे,
कंप्यूटर सेट पर।

साहित्य वाटिका
13/362, इंदिरा नगर,
लखनऊ (उ.प्र.)

दीक्षा की पहली हवाई जहाज यात्रा

डॉ. मनोरमा विश्वाल महापात्र

आज दीक्षा का मन बहुत खुश है। वह हवाई जहाज से परी दीदी के घर जा रही है। परी दीदी दिल्ली में रहती हैं। दीक्षा दिल्ली पब्लिक स्कूल में स्टैंडर्ड 3 में पढ़ती है। छुट्टियों में दीक्षा दादी माँ के साथ दिल्ली जा रही है।

वह पहली बार हवाई जहाज में बैठ रही है। दीक्षा का घर भुवनेश्वर में है। उसके घर से हवाई अड्डा ज्यादा दूर नहीं है। भुवनेश्वर हवाई अड्डे का नाम बीजू पटनायक अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा है। दिल्ली के हवाई अड्डे का नाम इंदिरा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा है।

इंदिरा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर अनेक देसी और विदेशी हवाई जहाज आते और जाते हैं। दादी माँ बता रही थीं, दिल्ली में घरेलू (डोमेस्टिक) और अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे दोनों आस-पास हैं।

भुवनेश्वर हवाई अड्डे पर दीक्षा दादी माँ के पास खड़ी है। उसे अत्यंत उत्सुकता हो रही है। पहले सूटकेस आदि सामानों की एक्सरे फोटो ली गई। बीस किलो से अधिक वजन होने पर अतिरिक्त शुल्क प्रभार लिया जाता है। इसलिए आते वक्त दादी माँ ने दीक्षा को सावधान कर दिया था इस बारे में।

विभिन्न एअरलाइनों के अलग-अलग काउंटर खुले हुए हैं। टिकट जाँच करते वक्त पासपोर्ट या आई कार्ड अनिवार्य होता है। किस समय कौन-सा हवाई जहाज कहाँ जाएगा, यह घोषणा किए जाने के साथ-साथ इलेक्ट्रॉनिक बोर्ड पर लिखा हुआ प्रकट होता है। यह बोर्ड बिलकुल टी.वी. जैसा होता है।

हवाई जहाज में जाने के लिए दो घंटे पहले हवाई अड्डे पर पहुँचना होता है। टिकट आदि जाँच के बाद सुरक्षा जाँच के लिए पुकारा जाता है। टी.वी. स्क्रीन पर यह लिखा हुआ प्रकट होता है। सब सूचनाएँ अँग्रेजी और हिंदी में लिखी हुई होती हैं।

सुरक्षा जाँच के लिए दीक्षा दादी माँ के साथ अंदर गई। पुरुष एवं महिलाओं के लिए अलग-अलग कक्ष से जाना पड़ता है। सुरक्षा कर्मचारी मेटल डिटेक्टर से सब जान लेते हैं। यदि कोई व्यक्ति हथियार, नुकीली वस्तु आदि छुपाकर ले जाने की कोशिश करता है तो उसी समय पकड़ लिया जाता है। यदि कोई अपराधमूलक वस्तु के साथ पकड़ा जाता है तो उसे हवाई जहाज में बैठने नहीं दिया जाता।

दीक्षा अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से चारों ओर देख रही है। कितने ही प्रकार के लोग हैं — कोई गंजा, तो कोई लंबा। एक मोटे पेट वाले व्यक्ति को देखकर दीक्षा हँस पड़ी। दादी माँ बोली, "इस प्रकार जोर की आवाज निकालकर हँसना

गलत है। तुम्हारे स्कूल में शिक्षकों ने तुम्हें कितनी अच्छी बातें सिखाई हैं। तुम यदि अच्छे बच्चे की तरह व्यवहार करोगी तो सब खुश हो जाएँगे। हवाई जहाज के अंदर जाने पर तुम्हें और भी आश्चर्य लगेगा। माइक्रोफोन पर घोषणा होने के बाद हम हवाई जहाज के अंदर जाएँगे।"

दीक्षा और दादी माँ को विदा करने के लिए दीक्षा के पिता और माँ भी हवाई अड्डे पर साथ आए हैं। उन्हें टिकट लेकर अंदर आना पड़ा। हवाई जहाज उड़ने तक वे प्रतीक्षा करेंगे। दीक्षा को कितने ही प्रकार के उपदेश दिए गए — दिल्ली पहुँचने के बाद अच्छे बच्चे की तरह चलना। जो सीलू दीदी देंगी वह सब खाना। दादी माँ की बात टालना नहीं।

दीक्षा सब बातों में सिर हिला रही थी। माता-पिता की बहुत लाड़ली बेटी है वह। कभी भी अवज्ञा नहीं करती। इसलिए टीचर उसे बहुत प्यार करती हैं। दिल्ली पहुँचने के बाद वह क्या करेगी, सब लिखकर रखा है उसने। परी दीदी बहुत सुंदर चित्र बनाती हैं। उनके साथ वह भी चित्र बनाएगी। गीत सीखेगी। परी दीदी सुंदर गाना गा सकती हैं । देशभक्तिपूर्ण गीत दीक्षा को बहुत अच्छे लगते हैं। 'सारे जहाँ से अच्छा...' गीत दीक्षा को बहुत प्रिय है।

माइक्रोफोन पर घोषणा सुनाई पड़ी, गेट नं. 3 से एअर इंडिया की उड़ान के लिए सभी यात्रियों को जाने का अनुरोध हुआ। गेट नं. 3 पर एक विमान परिचारिका ने फिर से टिकट की जाँच की। लाल रंग की दो बसें खड़ी थीं। उसी बस में दीक्षा और दादी माँ दोनों जाकर बैठीं। बस हवाई अड्डे पर खड़े प्लेन के पास यात्रियों को

छोड़कर अन्य यात्रियों को लाने के लिए लौट गई। इतना बड़ा हवाई जहाज दीक्षा ने पहले कभी नहीं देखा था। प्लेन हू-ब-हू एक चिड़िया जैसा दिख रहा था। उसके दो बड़े-बड़े पंख थे। दीक्षा डरते-डरते हवाई जहाज में बैठी। एअर होस्टेस ने दादी माँ को नमस्कार किया। खिड़की के पास वाली सीट पर दीक्षा और बगल वाली सीट पर दादी माँ बैठीं थीं। सीट के साथ सीट बेल्ट लगी थी। दादी माँ ने दीक्षा की कमर में सीट बेल्ट बाँध दी और फिर अपनी कमर में बाँधी।

एअर होस्टेस को विमान परिचारिका भी कहा जाता है। यात्रियों के पास आकर वह सबकी सुविधा-असुविधा पूछ रही थी। दीक्षा ने पानी पीना चाहा। एअर होसटेस ने तुरंत पानी की बोतल लाकर दीक्षा को दी। दादी माँ ने सिर के ऊपर लगे ऑक्सीजन के बटन को खोल देने के लिए कहा। प्रत्येक सीट के सामने कंप्यूटर जैसा टी.वी. लगा हुआ है। चाहें तो गाने सुन सकते हैं या फिल्म देख सकते हैं। प्लेन के अंदर एअर कंडीशन है। दीक्षा ने दादी माँ के कान में फुसफुसाते हुए कहा, ''दादी, मैं गाने सुनूँगी।'' दादी माँ बोलीं, ''ऊपर उठने के कुछ देर बाद तुम गीत सुनना।''

तभी विमान परिचारिका ने यात्रियों से प्लेन के उड़ने (टेक-ऑफ) के लिए तैयार होने की घोषणा की। दीक्षा को कुछ अटपटा-सा लगा। डर भी लगा। कुछ ही समय में प्लेन ने रनवे पर लंबी दौड़ लगाई और एकदम से ऊपर हवा में उठ गया। अब प्लेन निर्धारित ऊँचाई पर पहुँचकर सामान्य रूप से उड़ने लगा।

दीक्षा के मुँह से बोली नहीं निकल रही थी। गीत सुनने की बात वह पूरी तरह से भूल ही गई। ठीक उसी समय एक विमान परिचारिका ने एक बड़ी-सी ट्रे में स्वादिष्ट भोजन लाकर सबको देना शुरू किया। दीक्षा ने देखा कि एक बड़ी-सी ठेलागाड़ी में ट्रे रखी हुई हैं। कौन निरामिष खाएगा, कौन सामिष, यह विमान परिचारिका पूछ-पूछकर दे रही थी।

दीक्षा को मिठाई खाना बहुत पसंद है। खाने की ट्रे में चमचम थी। उसने अपनी पसंदीदा मिठाई खाई। दीक्षा ने देखा कि प्लेन में सब खाने में व्यस्त हैं। दीक्षा ने खिड़की से बाहर देखा, सुंदर धूप निकली हुई है। सफेद बादल रुई की तरह उड़ते जा रहे हैं। बादलों के बीच से निकलकर हवाई जहाज उड़ता जा रहा है।

सामने टी.वी. स्क्रीन पर अनेक सूचनाएँ लिखी आ रही हैं। कितनी ऊँचाई पर हवाई जहाज उड़ रहा है। किस शहर पर से यह गुजर रहा है, यह सब मालूम पड़ रहा था। बाहर का तापमान कितना है और कितने बजे दिल्ली में उतरेगा, सब सूचनाएँ दी जा रही हैं।

दादी माँ ने कॉलबेल बजाकर विमान परिचारिका को बुलाया और सिर के ऊपर के ऑक्सीजन के स्विच को और बढ़ाने के लिए कहा। फिर उन्होंने स्वयं ही एक बटन दबाया। बटन दबाते ही दादी माँ के सिर के ऊपर एक लाइट जल गई और वह एअर इंडिया की पत्रिका पढ़ने लगीं।

दीक्षा पूछ रही थी कि और कितने समय के बाद वे दिल्ली हवाई अड्डे पर पहुँचेंगे। वह सोच रही थी, परी दीदी और सीलू आपा सभी आए होंगे हमें अपने साथ घर ले जाने के लिए।

शाम के चार बजे होंगे। प्लेन के उतरने की घोषणा सुनाई दी। उतरते वक्त और ऊपर उठते वक्त बहुत सावधानी बरतनी होती है। इसके लिए बेल्ट बाँधे रखना होता है। इंदिरा गाँधी हवाई अड्डे पर प्लेन उतरा। कितना सुंदर दिख रहा है! नीचे नदी, पेड़, भवन सब चित्र जैसे लगते हैं।

दिल्ली हवाई अड्डा बड़ा विशाल है। वहाँ कितने ही विमान खड़े हैं। दीक्षा ने देखा कि एक गुफा जैसा घर विमान के साथ आकर लगा। इसके अंदर-अंदर जाना होगा। भुवनेश्वर में इस प्रकार की व्यवस्था नहीं हुई है। दादी माँ के साथ वह एक्सीलेटर से नीचे आई।

दिल्ली हवाई अड्डा चार मंजिल ऊँचा है। चार नंबर बेल्ट से अपना सामान लेने का निर्देश पहले से दे दिया गया था। सभी खड़े हैं। एक-एक करके लगेज बेल्ट पर सरकते हुए आ रहे हैं। अपना-अपना सामान पहचान कर लोग उठा रहे हैं। सीलू आपा फोन कर रही हैं। सामान लेकर शीघ्र बाहर आइए। हम गाड़ी के पास प्रतीक्षा कर रहे हैं।

प्रीतमपुरी, 125, आचार्य विहार
भुवनेश्वर (ओडिशा)

Toughy

S.K. Trivedi

Jaya and Vijay named their dog Toughy. She was really *tough* though not very fat. Nobody could dare to come near the gate of their house even in the pitch dark night.

Toughy would hear the foot steps and start barking very loudly. Her barks would wake up the neighbours also. This made the locality free of theft, since thieves don't have courage to go near waking people. As a result people would thank Toughy and enjoy sound sleep.

The latecomers also started reaching home early so that Toughy was not disturbed and, in turn, didn't disturb the sleep of the others.

Jaya made a good mattress for Toughy to sleep on. She made it so beautiful that Toughy, too, liked it.

She became sad when Jaya and Vijay said *'Bye-Bye'* to her and went to school. She sat on the windowsill, looking for them the whole day. On their return she became very happy, wagged her tail very fast and hugged them when they came inside her room.

After some days she understood that they had to be away for a few hours, so she, too, happily bid them good bye.

On coming home the firs thing that the children did was to spend at least half an hour with Toughy. This made her happy and three became good friends.

At night both the children kept Toughy in their bedroom and took

care that she didn't feel any discomfort. Toughy fluttered her ears when she had any problem.

If the children didn't wake up, she would feebly utter *'bhuk-bhuk'* and make it louder to attract their attention. On hearing it the children would wake up and do the needful, shower their love on her and ask her to feel easy.

One night she started barking so loudly that the children were alarmed. When they hurriedly opened their eyes, they saw the whole room filled with smoke. They immediately switched on the light and saw that there was smoke in the other rooms as well. They opened the door to let the smoke escape off and went in search of the source of smoke.

To their horror, they saw it coming from their parents' bedroom. As the door was not bolted, they opened it and saw a foam pillow burning brightly. The flames were about to catch the sheet hanging from a bed. They quietly pulled the pillow away with the help of a long stick and then woke their parents up.

Their parents saw smoke in the room. When the children briefed them, their father brought a bucket half-filled with water and dipped the burning pillow in it.

They opened all the doors and windows of the house and tried to find out how it all had happened. They discovered that the pillow had fallen on the coil, ignited to get rid of mosquitoes.

They all thanked Toughy who had saved their lives. After that she became all the more dear to one and all in the locality.

Dweepanter, L.B. Shastri Marg
Fatehpur-212601 (U.P.)

जब जागो तभी सवेरा

अंजली गुप्ता

रावी गाँव में कुछ दिनों पहले से ही रेलगाड़ी चलना शुरू हुई थी। छोटी-सी, तीन डिब्बों की गाड़ी के लिए पूरे गाँव में पटरियाँ बिछाई गई थीं जिससे सभी गाँववासियों को इधर से उधर आने-जाने में सुविधा होने लगी थी।

सभी बच्चे समय से स्कूल पहुँच जाते थे। पूरे गाँववासियों का जीवन उत्साह से भर गया था। जब शाम को सब गाँववासी अपने-अपने काम से लौटकर आते तो सबको सुबह का इंतजार होता कि कब सुबह हो और कब वो रेलगाड़ी में बैठकर जाएँ। वैसे भी रावी गाँव काफी अलग-थलग था।

सब कुछ व्यवस्थित ढंग से चल रहा था कि तभी एक ऐसी घटना घटी जिससे सभी गाँववासी परेशान हो गए।

सोनू और मोनू नामक दो भाई भी उसी गाँव में रहते थे और क्रमशः कक्षा चार और पाँच में पढ़ते थे। दोनों भाई बहुत शैतान थे और उनके दिमाग में हमेशा खुराफात भरा रहता था।

कब किसको किस तरह परेशान किया जाए दोनों इसी फिराक में लगे रहते थे।

एक दिन दोनों भाई झाड़ियों में पत्थर से खेल रहे थे कि तभी छुक-छुक करती छोटी-सी रेलगाड़ी वहाँ आई। एकाएक सोनू के शैतान दिमाग में एक खुराफात ने जन्म लिया। उसने एक पत्थर उठाकर गाड़ी की तरफ दे मारा और खुद झाड़ी में जाकर छिप गया। पत्थर सीधा एक डिब्बे में घुसा और एक जोर की चीख आई। दोनों एक-दूसरे को देख हँसे और घर चले गए।

घर पहुँचे तो माँ ने बताया कि आज किसी ने रेलगाड़ी पर पत्थर मारा जो पास में रहने वाली कमला दादी की आँख में लगा। उन्हें बहुत दर्द हो रहा है। सुनकर दोनों को खूब हँसी आई।

अब तो यह रोज का नियम बन गया। दोनों जगह बदल-बदलकर छिपकर रेलगाड़ी पर पत्थर मारते। इसमें उन्हें मजा आता, पर यात्रियों को चोट लगती। धीरे-धीरे लोगों ने रेलगाड़ी का इस्तेमाल कम कर दिया और पैदल ही आने -जाने लगे।

हमेशा की तरह उस दिन भी वे दोनों झाड़ियों में छिपे खेल रहे थे कि गाड़ी आई और सोनू ने एक बड़ा पत्थर उस पर मारा और खुद छिप गया।

थोड़ी देर बाद वे घर बैठे अपनी शैतानी पर हँस रहे थे कि तभी चौंक पड़े कि महावीर काका और मदन फूफा जी उनके पिता जी को उठाकर ला रहे थे। पिता बेहोश थे और खून से लथपथ थे। उनकी ये हालत देख दोनों बच्चे रोने लगे, क्योंकि वे अपने पिता से बहुत प्यार करते थे।

चोट काफी गहरी लगी थी इसलिए पूरे दिन के अथक परिश्रम के बाद वैद्य जी उन्हें होश में ला सके। उनके होश में आते ही मुन्ना उनके सिरहाने बैठता हुआ बोला, ''बाबू, आपको चोट लगी कैसे?''

''मैं रेलगाड़ी से आ रहा था कि पूरब वाली झाड़ी के पास किसी ने एक पत्थर मारा। वो आकर मेरे माथे पर जोर से लगा।'' पिता ने कमजोर आवाज में जवाब दिया।

दोनों भाई सकते में आ गए। तभी उन्होंने बाहर देखा कि कमला दादी लाठी टेकती और रास्ता टटोलती हुई अपने घर जा रही थी।

सहसा सोनू ने एक निर्णय लिया और सिसकते हुए बोला, ''बाबू, वो पत्थर मैंने ही मारा था!''

''तुमने?... लेकिन क्यों?'' पिता चौंक गए।

''बाबू, हमें माफ कर दो!'' दोनों ने रोते हुए कहा।

''तो पत्थर तुम्हीं लोग मारते थे?'' महावीर चाचा ने पूछा।

''वास्तव में तुम्हारा अपराध बहुत बड़ा है। गाँव के बहुत लोगों को तुमने चोट पहुँचाई है।'' मदन फूफा ने दुखी होकर कहा।

''सच कह रहे हैं फूफा जी। पर अब हम पक्का वादा करते हैं कि कभी भी शैतानी नहीं करेंगे जिससे किसी का नुकसान हो।'' मोनू ने सिर नीचा करके कहा।

''जब तुमने अपनी गलती मान ही ली तो हमें तुम्हें अब माफ करना ही होगा।'' बाबू ने कहा।

क्षमा पाकर दोनों भाइयों के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई। उनकी सच्चाई के कारण सबने उन्हें माफ कर दिया, क्योंकि सच्चाई का सभी आदर करते हैं।

इस घटना के बाद रावी गाँव के लोग फिर से उत्साह के साथ रेलगाड़ी का मजा लेने लगे।

ब्लॉक-आर 6 ए,
दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110095

नन्ही गौरैया

राकेश 'चक्र'

कहीं दूर अब
दुबक रही नन्ही गौरैया
भोर में अपना गीत
सुनाती थी हर बिरिया।

कंकरीट के जंगल ये
डैने फैलाए
फौलादी पंजों-से
अपने डंक गड़ाए
धरती को
मुट्ठी में करने को आतुर हैं
देख-देखकर
सुबक रही नन्ही गौरैया।

ये बहुमंजिली फ्लैट
नहीं हैं कोई अपने
जिसमें नन्ही गौरैया
बुन पाए सपने
छप्पर, फूँस, औसारों की ठंढक को
पल-पल
भरी आँखों से
खोज रही नन्ही गौरैया।

पेड़ों पर आरी चलती
दिन में, रातों में
लूट-लूट धन लोग रख रहे हैं
खातों में
हँसी उड़ाते सब
विद्वानों की बातों का
कौन बचाए
पूछ रही नन्ही गौरैया।

प्यारी गौरैया थी
बच्चों की हमजोली
करती थी नन्हे-मुन्नों से
आँख-मिचौली
उन बच्चों को
दुखी देख अपने आँगन में
बहुत दूर से
टेर रही नन्ही गौरैया।

90, शिवपुरी
मुरादाबाद (उ.प्र.)

Monkey and His Shoes

Prabir Kumar Pal

A monkey lived on a tree near a temple. He noticed many people visiting the holy place. All were wearing shoes. Only before entering the temple-gate they would put off their shoes.

One day the monkey thought, "Men put on shoes. Certainly shoes give comfort to them. Since! I have four legs I shall get double comfort if I wear shoes."

But the monkey did not know that they have no legs. All the four are hands. Because they have nails and no claws.

However, thinking of his comfort, he stole a pair of shoes. But problem came when he tried to wear the shoes. In which legs should he put them on?

First, he put on the shoes in his front legs. But he got no comfort. It caused troubles only. He could not climb up the trees as easily as before.

Secondly, he put them on in his hind legs. This time too he got no comfort as he could not run quickly.

Then he put on one part in his front right leg and the other in his back right leg. This time too he got no comfort.

Finally, he gave one shoe to his wife to wear. And he himself wore the other part. But this time too he got no comfort.

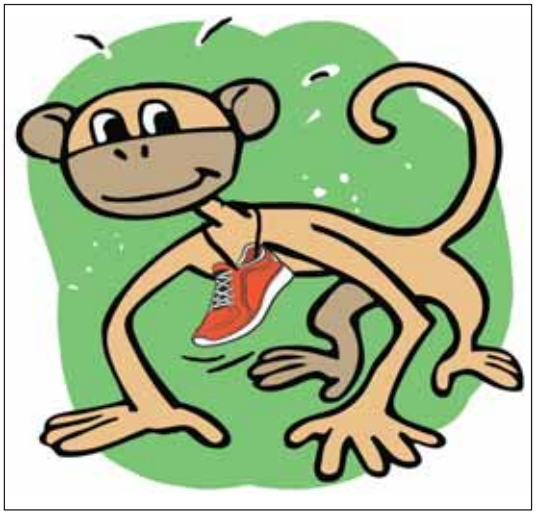

Next day, he saw a lame man in the market. He was wearing shoes around his neck.

He came home running and said to his wife, "I have seen how to put on shoes. Give me a piece of rope to tie the shoes together. I shall put on one part around my neck and you can put on the other part." The shoes began to hang like lockets around their necks. People saw them and laughed and laughed.

Only the readers know the truth. The lame man was wrongly garlanded with shoes for stealing. The monkey was the real shoe-thief.

P.O. Bhadrapur
P.S. Nalhati, Dist. Birbhum-731237
(West Bengal)

बच्चों को अपनी ओर खींच लेती हैं खूबसूरत भंवीरियाँ

बलविन्दर 'बालम'

बच्चों को अपनी ओर खींच लेती हैं फबीली, रंग-बिरंगी, हवा में घूमती भंवीरियाँ। किसी वस्तु को आकार देकर रंगों को सही ढंग से तकसीम करना एक कला है। रंग-बिरंगी भंवीरियों का भव्य आकर्षण बच्चों को क्या, बड़ों को भी मोह लेता है। हवा में भंवीरियों के समूह का घूमना और खूबसूरत दृश्य पेश करना और आँखों के जरिए हृदय-दिमाग़ में उतर जाना खूबसूरत भंवीरियों की फितरत में है।

'भंवीरी' शब्द भँवर से बना है। भँवर का अभिप्राय होता है—जल के बाहर वह स्थान जहाँ पानी की लहर एक केंद्र पर चक्कर खाती हुई घूमती है। ऐसा स्वभाव है भंवीरी का।

बच्चों की खुशी के साधन भी उनकी नन्ही-मुन्ही-सी सोच के बराबर ही होते हैं। बच्चों की खुशी, मनोरंजन, उमंगें इत्यादि खिलौनों में अधिक होती हैं। रंगों के मिश्रण से बच्चे प्रभावित होते हैं तथा जिज्ञासा में उतरते हैं। उनकी संवेदनशीलता उत्पन्न होती है। अलग-अलग रंगों के खिलौने उनके मन-हृदय-आँखों को भाते हैं जिनसे उनको खुशी मिलती है।

भंवीरी भी एक प्रकार खिलौना ही है। बच्चे बेशक रंगों के अर्थ न बता सकें, परंतु उनको महसूस कर लेते हैं। इसलिए घूमती हुई भंवीरी के अलग-अलग रंगों की बुनत, गोलाकार शैली-शक्ल, बाँस की तीलियों की जड़त, सब मिलकर मनभावन दृश्य उत्पन्न करती हैं। खिलकर के भंवीरी हृदय-दिमाग़ को छू जाती है। अच्छी लगती है।

भंवीरी बेचने वाले एक कारीगर ने बताया कि वह प्रत्येक वर्ष झारखंड से पंजाब तथा अन्य राज्यों में आते हैं। प्रत्येक मशहूर शहर में भंवीरियाँ बनाकर बेचते हैं। उसने बताया कि भंवीरी बनाने के लिए बाँस की तीलियों का प्रयोग किया जाता है। बाँस की बारीक घुमावदार (लचकदार) तीलियाँ बना ली जाती हैं। बारीक तीली को गोल आकार दिया जाता है। इसके ऊपर रंगीन पतंग पेपर लपेट दिया जाता है।

सभी तीलियों के ऊपर रंगीन पेपर चिपका दिया जाता है, सफाई तथा कारीगरी के साथ। फिर गोलाकार तीली में तार का छोटा-सा छल्ला तथा उसमें बाँस की पकड़ तीली लगाई जाती है और गोलाकार तीली में फिट किया जाता है। पकड़ वाली तीली के सिरे ऊपर भंवीरी का छल्ला फिट किया जाता है। गोलाकार चक्कर में तरबूज की भाँति रंगीन पेपर फिट किए जाते हैं। यह सारा कार्य एक कुशल शिल्पकार करता है।

भंवीरी बनाने के इस कार्य के लिए कारीगर की सफाई, कौशल के अलावा रंगों का चयन,

सही आकार आदि शामिल होते हैं।

भंवीरी हस्तशिल्प की अनूठी कला है। तैयार भंवीरी को एक बड़े बाँस में, जिस पर घास-फूस लपेटकर उसके ऊपर बारीक कपड़ा बाँध दिया जाता है। फिर इसे धागों से लपेटा जाता है और उसमें भंवीरियों की पकड़ या छड़ी को धँसा दिया जाता है। भंवीरियों को इस तरह टाँगा जाता है कि देखने में आकर्षक लगे। हवा चलने से या बेचने वाले के तेज चलने से भंवीरियाँ बाँस में इस तरह से घूमती हैं कि मनभावन दृश्य बनता है।

जब हवा में भंवीरियों का समूह घूमता हुआ आकर्षक दृश्य बनाता है तो राहगीर स्वयं ही रुक जाते हैं और वे इनका लुत्फ उठाए बगैर आगे नहीं बढ़ पाते। भंवीरियों का सम्मोहन उन्हें रोक लेता है और अपनी ओर खींच लेता है। बच्चे इस सम्मोहन का ज्यादा शिकार होते हैं और वे लपक पड़ते हैं भंवीरियों की ओर। अभिभावकों की जेब से पैसे खींच लेती हैं भंवीरियाँ। बच्चे इसे लेकर ही छोड़ते हैं।

कारीगर ने बताया कि भंवीरी के सारे खर्चे, किराया भाड़ा आदि निकालकर वे केवल इतना ही कमा पाते हैं कि किसी प्रकार अपना पेट पाल सकें। भंवीरी उनकी आजीविका चलाती है। भंवीरी बनाने की ट्रेनिंग लेनी पड़ती है। भंवीरी का आकर्षण बच्चों को सदा भाता रहेगा।

ओंकार नगर, गुरदासपुर (पंजाब)

मटके का पानी

कमलसिंह चौहान

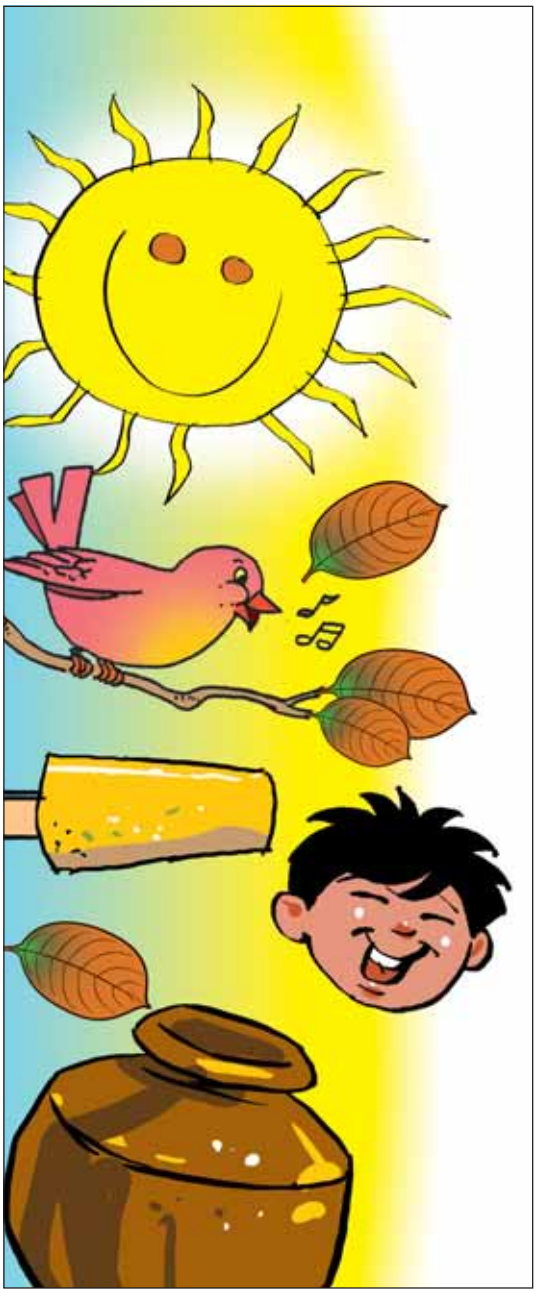

गरमी आई, चुन्नी जागी
छोड़ रजाई ठंडी भागी।
सूरज निकला धूप खिली है
सोफिया, मुन्नी, रजिया जागी।

बाग के पत्ते बिखरे आँगन
पतझड़ हो गए सारे कानन।
पक्षी बसेरा ढूँढ़ रहे हैं
गायें आईं भागी-भागी।

कुल्फी, ठंडाई, बरफ का गोला
बेच रहा है चिंटू भोला।
आवाज सुनी है बच्चे दौड़े
खाई कुल्फी गरमी भागी।

मटके का अब मौसम आया
ठंडा-ठंडा पानी लाया।
निकला पसीना चमकी बूँदें
गरम हवा की किस्मत जागी।

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
ग्राम एवं डाक-पाड़ला
जिला-कैथल (हरियाणा)

My Dream Travel Through Time

Ahir Verma

One day I was sitting at home. It was a peaceful day. Suddenly I heard a screaming in the kitchen. I ran to see what had happened. And the news was shocking. My mom told me that the time travel machine had been invented.

At first I asked her if she really thought she could fool me, but the neighbours were also screaming about the same thing. I got so excited that I nearly exploded! I couldn't believe it! But there was one problem. I probably wouldn't get to use it for years until it became cheap.

At that very moment, the phone rang. It was one of my friends! We spent hours chatting about the time travel machine. Then the phone started beeping. "Hold on," I said, "I'm getting another call." At first I assumed it would just another friend of mine. But when I found out who it was, I was in an even bigger shock than before.

It was Prof. Timeman, the person who invented time travel! I couldn't believe my ears! I thought it was a trick and was about to put down the phone when a voice on the other end said, "We want you to try time travel!" I slowly raised the phone and asked, "Can you please repeat that?" I was starting to believe this really was Prof. Timeman. He said, "Ahir Verma, you have been chosen to try time travel." I couldn't believe it!

I ran to tell my parents, but they didn't believe me. I told them to come to the phone. I redialed the number and sure enough, the same person picked up the phone, "Prof. Timeman?" I asked. "Yes, you again Ahir. Come quickly, the machine is wasting its battery." My parents were awestruck. I went straight to the place where Prof. Timeman told me to go.

It was a big building, shining bright, with the words *TIME Corp. Ltd.* written on the front. I entered to meet Prof. Timeman. "You are here!" he exclaimed, "We all are very excited over

the invention of time travel. Follow me, let me show you the machine."

We entered a big room. There was a giant machine in the front the *time machine*! It was transparent, so you could see the wires! It was so intricate!

Prof. Timeman said that it bent two points in time together and then moved you to the other point. As long as the time machine kept the time bent, you could go back to your time whenever you wanted to. "We want you to be the second one ever to use this machine!" he said. Then he asked, "Where in time do you want to go? We are only capable of within five years of now."

I thought for a long time. Then I replied, "I want to go to where I will live five years from now to meet my older self."

"Very well," he said, "Step into the machine!" I stepped in. Prof. Timeman closed the door and pressed a few buttons. The machine started whirring. It started to move. The whole machine was spinning! I held on to the railing on

the side as I looked out; and what I saw amazed me.

I saw myself as a baby! Then a few seconds later a toddler! Then a young child! Then I saw myself as I was now! I saw a me from seconds ago looking out of a time machine. Then I saw a person who looked like me, but older! It was a teenager with my face! It must be me in the time that I was travelling to!

Then the machine started slowing down. It settled onto my backyard. I looked around. Everything seemed different, so, so modern! I stepped out and walked up the stairs.

I rang the doorbell. Then my mom, but older, opened the door. "I know you are not going to believe this, but I am your son!" I told my mom. "Oh, I believe it!" my mom said, "Come in!" I came in and was surprised that she was not questioning me. "Why aren't you surprised?" I asked. "Well we've had you here before. You see, after you came here the first time, you came back again many times," my mom said, "Oh, that makes sense! I keep on getting confused with this time travels business."

I looked around the house. It looked so new. Almost everything was run by a touch screen computer. "This place is amazing!" I said. "Well if I can remember how it was five years ago, it's gotten quite amazing since then, " said my mom. Then I awkwardly asked, "Can I meet Ahir—I mean me—I mean old Ahir—I mean old me?"

"Of course," said my mom.

I went to the computerized living room, to see myself, but older, sitting on the couch, "Oh, you're here again—I mean I'm here again," my older self said, "This looks like you are at the time when you—I mean I first came here!"

"Well I am!" I said, "Nice to meet you—I mean me—Oh whatever!"

My older self laughed and said

"I remember when I was you at the exact age that you are now! I remember having trouble saying those exact things; mainly because I am you!"

"That makes sense," I said, "Could you also tell my five year future?"

" Yes I could!" he said, "But we'll save that for the end of your trip. Let's take a tour of the house!"

He showed me the house. The oven was set by pressing touch screen buttons on a computer panel and the heat was adjusted by sliding your finger! The stove worked in a similar way, except it had no fire. You could control your bed's heat by a touch screen button! Also, the entire house was run on solar energy.

I couldn't believe how computerized it was! And to think that this would be my house in coming five years! I stayed in their house for days. I had fun with all the modern technology. I learned what I would be like when I was older. I would go back home in two more days.

Then one day, Prof. Timeman was scared... "The time machine is breaking down!" he yelled. "If the two points in time fall away from each other, Ahir will get trapped in time!" And then, the two points in time started falling away from each other.

I noticed that the whole world was shaking. "Everything is shaking!" I shouted. But everyone said they didn't know what I was talking about. This was probably because I was the one who had come from a different time.

And then my older self said, "I remember this happening five years ago! You are going to freeze! Brace yourself! Suddenly, everything started slowing down from my prespective. I became slower and slower, until the world was frozen and I was frozen in time.

My older self told everyone that there was no need to be afraid. He remembered this happening to him and how he was rescued, which meant that I too must have been rescued in the next couple of minutes.

Meanwhile Prof. Timeman was panicking, just then the time machine started working and the time portal opened. But there was a major problem: It was extremely unstable, which is why I could have very, very minor bursts of movement, but they were negligible.

But Prof. Timeman took a chance. He tried the time machine to go to where I was. It worked-well. Because the machine was unstable, he partly went into the time I was in, and partly stayed in his time. Therefore he was not frozen.

He came to the house. He found me and held my hand instantly. I became free from the timely prison. Since he was touching me, I too was partly in my own time. But not completely. Still holding Prof. Timeman's hand, I said good-bye to my mom and my older self, got into the time machine, and when it became completely stable, went home.

When I came home, it had only been a few hours! I went to my house and gave my mom a big hug. I told her all about my trip and lived happily in my house!

Five Years Later...

I was sitting in my house, the exact house that my older self had shown me five years ago. Then the doorbell rung. My mom opened the door, talked for a minute and then let the person in. They walked into the living room and I found my five year younger self in front of me...

anvitaabbi@gmail.com

नीमवाला घर

ओमप्रकाश बजाज

हमारे आँगन में बाईं ओर
नीम की घनी छाया है।

बहुत पुराना यह पेड़ न जाने
कब किसने लगाया है।

संभव है अपने आप ही
यह धरती में उग आया हो।

बहुत-से लोग इसके पत्ते
डालें माँगकर ले जाते हैं।

कीड़ों से बचाव हेतु कपड़ों
किताबों, अनाज में लगाते हैं।

इसकी टहनियाँ कई लोग
दातुन के काम में लाते हैं।

दाईं ओर एक और पेड़ है
जो मीठी नीम कहलाता है।

उसके पत्तों का उपयोग कई
व्यंजन बनाने में किया जाता है।

दोनों वृक्षों से हमारा वर्षों का
ऐसा निकट का नाता है

कि हमारा घर आसपास में
नीमवाला घर कहलाता है।

बी-2, गगन विहार, गुप्तेश्वर,
जबलपुर-482001 (म.प्र.)

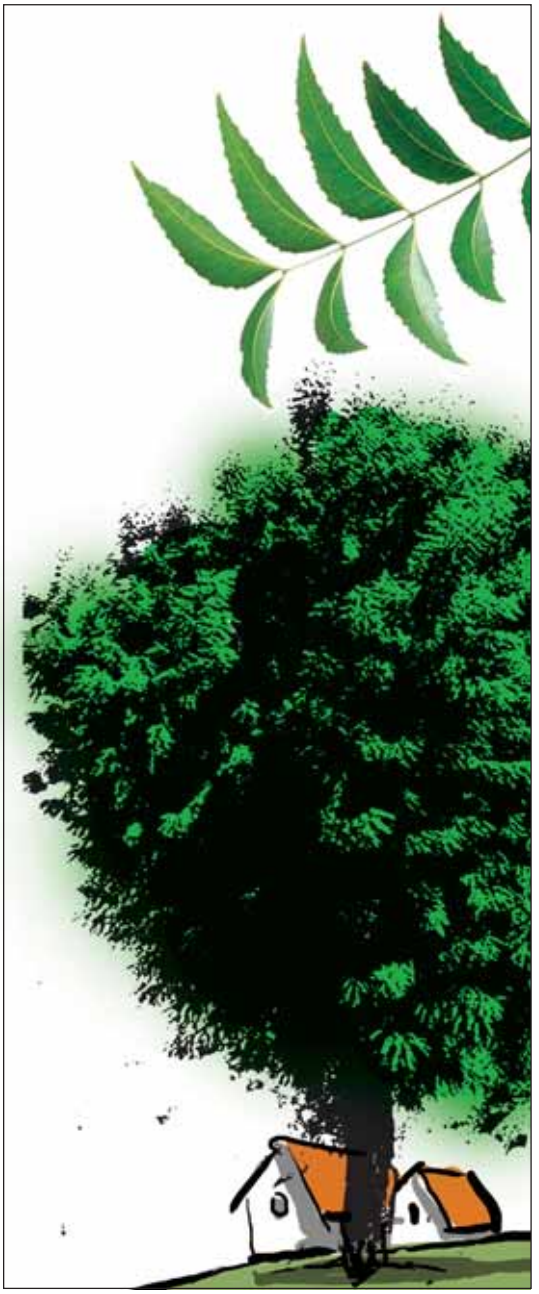

बस की यात्रा

रान्दाय तोरकोद

मैं किरीबुरू में रहती हूँ। मेरी नानी ने गरमी की छुट्टियाँ बिताने के लिए मुझे राँची बुलाया था। मैं नानी-घर जाना चाहती थी, इसलिए चार बजे भोर में ही उठकर भाई के साथ राँची बस स्टैंड पहुँच गई। थोड़ा इंतजार करने के बाद बस आ गई। बस में चढ़ते समय कंडक्टर ने कहा कि डेकला-डुकली न चढ़ें, किसी को चोट लग सकती है।

फिर हमलोग लाइन लगाकर बस में चढ़ गए। मैं बस में खिड़की के पास बैठी थी। मैं कभी किसी बस में टी.वी. नहीं देखी थी। बस में अचानक टी.वी. चालू हुआ तो मेरे होश उड़ गए। अन्य यात्री बड़ी ही खुशी से टी.वी. देख रहे थे। मैंने आश्चर्यचकित होकर टी.वी. देखा, क्योंकि मैं पहली बार टी.वी. देख रही थी। टी.वी. पर गाना बज रहा था। सभी लोग खुशी से नाचने लगे। मैं भी उनलोगों को देखकर खुशी से गुनगुना रही थी।

मैंने खिड़की के बाहर देखा तो बड़े सुंदर-सुंदर नज़ारे थे। मैंने बड़ी-बड़ी पहाड़ियाँ देखीं। बस थोड़ी ही देर में टेबो घाटी पहुँच गई तो मैं भाई से बोली कि मुझे भूख लग रही है। तो भाई ने कहा कि ठीक है, खाने के लिए कुछ ले आता हूँ। भाई कुछ समोसे और जलेबियाँ लाया। मैं भाई के साथ बस में बैठकर खाते-खाते आगे की ओर बढ़ गई। बस में बहुत सारी मस्ती की।

अब मैंने सोचा कि थोड़ी देर सो लूँ, लेकिन मैंने देखा कि लंबी-लंबी मूँछों वाला एक व्यक्ति जोर-जोर से खर्राटे मार रहा था। इस कारण मैं सो न सकी। उसके बाद बस राँची पहुँच गई। फिर भाई ने कहा कि हमें नानी-घर जाने के लिए टैक्सी पकड़नी होगी। हम दोनों टैक्सी में बैठे और खुशी-खुशी नानी-घर पहुँच गए। मेरी नानी जहाँ रहती है उस स्थान का नाम खाटा टोली है। वहाँ हम दोनों भाई-बहन नानी के साथ बड़े मजे से छुट्टियाँ बिताए। वहाँ हम बाजार और अन्य स्थानों में घूमे। छुट्टियों में हमें बहुत मजा आया।

प्रोजेक्ट उच्च विद्यालय
पोस्ट ऑफिस - किरीबुरू
जिला-प. सिंहभूम (झारखंड)
पिनकोड - 833222

My Page

Mysterious Ring

Pakhi Saini

Kareena and her sister Radhika stood on the front door of their grandmother's huge house. Kareena was wearing a pink t-shirt and blue jeans. And Radhika was wearing a red t-shirt with black coloured capri. Waiting at the door, Kareena took out her Mp3 from her black backpack and then dropped her suitcase.

They had come to enjoy at their granny's house in vacations.

Her granny opened the door. She was pale and weak. But she had been very pretty since childhood.

They ran to their rooms. Assembling things in the drawers was tough.

After that, Kareena explored the house all by herself, although she had done it many times before. But she liked exploring things. She found some rooms, which were dark. She dared not go inside the horrible rooms. She then saw something moving inside a room. She went in cautiously.

Alas! There was a mouse eating a piece of rotten cheese on the table. She laughed and then went on. She found a brightly lit room and went inside. She saw her granny staring at some paintings

with tears in her eyes. Kareena then remembered her serene grandpa who was killed in a car accident. Hugging her granny Kareena suggested her to sleep. After listening to an audacious story from granny, they slept.

The days went blithely.

One day, while Radhika and granny had gone for shopping, Kareena entered her granny's room. The room was cheerful, just like her granny. She then entered the closet. She found some old clothes. After shoving the clothes to a side, she went deeper. Coughing vigorously, she fell down. The place smelled like moth balls. She took a step deeper.

Huh! she said, when she saw a beautiful ring box. She went near it and kept on watching it as the box looked

gorgeous. She opened the box and dropped it. She was awestruck as the ring inside was gleaming. Picking up the box, she crept out.

As soon as she opened the box, the ring flew and fitted itself in her index finger.

Shocked and scared, she tried to take it off, but in vain.

And the next moment, she found herself on a strange, spooky island. A chill ran down her veins. The water was black and the trees, sky all black. There was little light, enough to see the surroundings. She looked at the trees, looked at sky and surroundings.

She observed that the trees were moving, dancing, to tell her that, she was no longer alive.

She was trapped in a terrible dream of the ring. She then looked at her finger, The ring was there, but there was something odd about it. It wasn't pretty anymore. It had a face inside, laughing at her foolishness. The face was so ugly, so creepy, so evil. A cloudy form was moving inside the ring. It moved as if it were alive.

The face frowned inside the ring.

Kareena screamed with horror and ran all the way to the other end.

Surprisingly, she stopped and wondered the island being so small. Near the rocks, she found a man, lighting fire. He turned around, his eyes bulged.

He looked like a *zombie!*

Trembling, Kareena asked his name. He replied softly.

Confident, she told him about herself and how she came here. The man named, Mohan told her that he had not desired to wear the ring also as he knew what would happen if the ring is taken out of the box. Mohan knew the way to get out of the island as his grandpa had told him in case of emergency. But he warned Kareena never to open the box again because the way to get out could be used only once.

They held the rings together which shone brightly and Kareena found herself at home. Mohan was there too. He looked much younger and handsome than before. He then ran away without saying a word. Granny and Radhika hadn't returned yet.

The ring fell down from her finger and she let out a sigh of relief. The ring looked much better.

Kareena kept the box in the closet, deep and safe.

The next day she woke up and saw Radhika looking at the same box. She opened it and before Kareena could stop her, she wore the ring and said—"Isn't this cool?"

E-22, Bali Nagar,
New Delhi-110015

खुद करके देखो

लोहे की कील, तांबे की रंगत

आइवर यूशिएल

विज्ञान विषय भी है और खेल भी। नहीं मानते? तो लो, हाथ कंगन को आरसी क्या?

तमाशे के लिए जरूरी सामान :

तूतिया, तार, बड़े मुँह वाली काँच की बोतल, टॉर्च के दो सेल, एक पुराना बड़ा चम्मच, लोहे की एक कील, तांबे का नंगा तार।

तमाशे की तैयारी :

सबसे पहले तो भई कील को अच्छी तरह साफ कर लो, ताकि इस पर चिकनाई या जंग आदि कुछ लगा न रहे। अब इस कील को तार के सहारे सेल के ऋण ध्रुव से जोड़कर इसे काँच की बोतल में लटका दो।

इस बोतल को पहले से ही तुम्हें पानी से भर लेना है और इसमें इतना तूतिया डालकर घोलना है जिससे पानी का रंग गहरा नीला हो जाए।

अब लो तांबे की तार को और इसे किसी पेंसिल आदि पर लपेटकर पेंसिल को इसके बीच से निकाल लो। ऐसा करने पर तांबे का यह तार एक स्प्रिंग की-सी शक्ल ले लेगा जिसे बाद में तुमको सेल के धन ध्रुव के साथ तार की सहायता से जोड़ देना है। स्प्रिंगनुमा इस तार को भी तुम बोतल में लटका दो, पर एक सावधानी बरतते हुए कि स्प्रिंग और कील घोल में एक-दूसरे को छुएँ नहीं।

अब देखो तमाशा :

तुम्हें देखकर आश्चर्य होगा कि कुछ ही देर में कील के ऊपर तांबे की रंगत आनी शुरू हो गई है, यानी कील पर तांबे की कलई चढ़ रही है।

घोल में डूबी कील को इस तरह चमकदार होते देखना तो बहुत अच्छा लगेगा तुम्हें, पर इस क्रिया को कहते क्या हैं और इसके पूरा होने के पीछे क्या कारण है, यह तुम बता सकते हो क्या?

सी-203, कृष्णा काउंटी
रामपुर नैनीताल, मिनी बाईपास
बरेली-243122 (उ.प्र.)

Book Review

So Many Smiles

Bapi, the protagonist of the story is a little boy who is always teased by a group of boys in the school, especially Latbar who is the leader of the group. Latbar is boisterous about his knowledge and likes to make fun of Bapi.

Bapi always feel embarrassed and the embarrassment makes him weep. Once he even tried to experiment by not drinking water for two days, so that he does not shed tears from his eyes.

Latbar has a habit of telling stories about his adventures to his friends. He talked in such a manner, that whoever listened to his stories believed him. One day he tells his friends that the mustachio that he is sporting was not originally his own but was surrendered to him by a deadly giant who he had defeated in a wrestling bout.

All of his friends go for an excursion to the Peacock hill, but they do not let Bapi accompany them. This left Bapi disappointed but he decides to go to Peacock hill all of his own though people had told him that many demons live in the hill. This excursion brings many changes in Bapi.

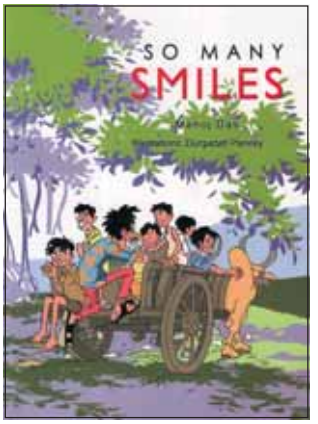

So Many Smiles
Manoj Das
Illustrated by *Durgadatt Pandey*
National Book Trust, India
₹ 75.00

The unique style of the author makes the story fun-filled and humorous. It takes the reader to the wonderful and innocent world of childhood where imagination and make-believe stories play an important role. The author through characters like Bapi and Latbar brings about the different aspects of childhood and how children learn from the unknown difficult tasks that they take as a challenge to prove themselves.

R.N.I. No. -64771/96 Postal Regd. No-DL-SW-1-4066/2012-14
Licenced to post without prepayment, L. No. U (SW) 24/2012-14 Mailing Date :. 20/21 Same Month
Date of Publication: 14 /05/2014